## २ ऋ्नारवार्य ७ त्निण्किणात दीव्रताः ऋ्नारवार्यः

त्य हिक्रीखावता, लक्ष्य, छिल्म्बर ७ उन्तरकह्म ज्ञानूषत आञ्चिक जागत युक्टात ७ कर्मवालक नियक्ति ७ পরিচালিত করে, তাকেই আন্নরা ন্মূলত ন্মূল্যবোর্ষ वल थाकि अभाक्ष कीवल भानुखन व्यक्तिशण ७ अभिष्ठेशण आधाद युवशाद ७ कर्मवग्र एम अवन तीणिश्चालाव अर्विपुक्त अविहालिए । तियेकिए उस णाएम अमिथिक आमाष्ट्रिक मूलुर्वार्व वला এম আর উই নিয়াম (M.R. William) এর মতে, 'মুল্যবোর্ধ त्रातुख्व रेष्टात प्रकृषि अवीत त्रातम्क प्रव प्रार्भलन भातूर्यत जागत युवशत ७ नी कि निर्मेखक रय पवः परे व्यानमत्व अमाएक मानुस्य काल्स 'अला- ऋम विभेष क्या स्या"

उन्नाष्ट्रविकाती एकत त्मतत धन्न ज्ञाए,
Social valu embraces arritange of qualities
for a place such as spiritual, traditional,

economie, political or national qualities which are valued by the majority or majority group of the place."

व्यर्थां आभाष्ट्रिक भूमाऽतार्य यमाए त्यान भूमा या प्रमायात्र विभीमा प्रेणिश्यास्त्र, प्रार्थतिष्ठिक वा क्षाणीम भूमायमित्व द्वसामा, या प्रे भ्रात्व प्रार्थिकाः वा भूभाश्याक लाक शामन करमा

## लेखिकणाः

णित विश्वाभ यद्राप्टत त्य, क्वांती श्रुती युद्धित जिड़म ज्याप्टर भारत ता प्यर त्याम रवार्यंत जिड़म राष्ट्र क्वांत (Knowledge) प्यर प्यत्यामर्वार्यंत जिड़म राष्ट्र प्यामा (Ignonance)। भारतकी ए रवाभात मार्गतिकता प्यामात्रतत कार्षि प्याभात मार्गतिकता प्यामात्रतत कार्षि प्याभात मार्गतिकता प्यामात्रतत कार्षि प्याभात मार्गतिकता प्राप्टित त्यामात कार्मि प्राप्टित कार्मि प्राप्टित कार्मि प्राप्टर काम एय्यार Manals प्यर Monality (तिष्ठिकण) मामत प्राप्टर प्राप्टर तिष्ठिक भ्रुत वर्त्याप्टर, निष्ठिक भ्रुत वर्त्याप्टर, विष्ठिक भ्रुत वर्त्याप्टर, विष्ठिक भ्रुत वर्त्याप्टर, विष्ठिक भ्रुत वर्त्याप्टर, विष्ठिक भ्रुत वर्त्याप्टर, व्यामा प्राप्टर स्थाप्टर स्थाप

Cambridge International Dietionary of English - u वला २८१६ ए. सिण्किण रत्ना.

"आला- अम 'आधार श्रम्ला, अण्ण चेणामित आत्थ-डाञ्भवर्षयुक्त पविषे श्रम, या প্রত্যেক व्यक्तिचे आरेम विश्वा 'अम्य काता विषयात 'शिक्त क्रिक् श्रुकृष्ट्र वर्ष वाक्।"

२ पारेत्व छेड्य:

आष्टेत्व उड्डममध्य :-

- a. श्राथा
- २. दिर्झ
- ७. विभवाल(यव जिष्काक
- विख्वातञ्जनण च्यालाहता
- **७** न्त्रायुवार्य
- णारित श्रविधित
- প. ত্থনগ্ৰত
- b ध्वज्ञाञ्जनिक <u>पा</u>ष्ट्राय
- २ अश्विधात

निस्त्र पारेत्व छेड्यअद्युख्व -विश्वाविक वर्तना (५३१ स्ला:-

Scanned with CamScanner

## र श्राः-(Custom)

अथा जारेतित प्रविधे अभ्राधित छेडमा आधीतकात एएक एराभव जामत वर्षरात, दीजि-तीजि ७ जाजाम समाएक जाविकाश्चा व्हतना वर्ष्या अप्रार्थिक, स्त्रीकृष्ठ ७ शालिण रास जामाहा, जाक अथा वला आधीतकाला क्याता जारेतित जाकिष्ठ किल ता ज्यात अमित्रण अथा जाजाम ७ दीजि-तीजित सारास्य मातूस्वर ज्यामात्र तिसिक्षण राजा कालका जात्तक अथारि नास्ति वर्ण्य स्त्रीकृष्ण रास जारेतित मर्भामा जार्क्त वर्षा छाठे दिजित्त स्त्रीवात जारेत प्रकृत अथारिक्या धेर्म्म (Religion):-

विभीम जिल्ला अत ७ वर्म अक् जार्र ति प्रवारि शुक्रप्रक्र्म जिंद्र अधिम ७ कर्ष भूका विभीम विवि विधानकर वार्ष्मीम जिल्ला कार्य नार्ष्मीम जिल्ला कार्य विधानक जार्य विभीम विधानक जार्य कर्म विधानक जार्य कर्म विधानक जार्य कर्म कर्म कर्म कर्म जाता जावा कर्ष्म म क्रिस मा।

## <sup>6</sup> विभागास्त्रत निकाराः

विहोत व्यता फिल्पद अहलिण ज्यारीन जिनुझाद विहोत वाक् भविहानता यादा थात्वाता एमभार्ष नाकारण ব্যাথার কারনে অথবা পরিবর্ডিত অবস্থার প্রেক্ষিত্ত विठात यया यथत एन विवाक्तात पारी हाता সামনা স্বাদ্যার নিজ্ঞান্তি করতে সমর্থ হয় না ण्यत णाया निष्ट्रात्व विवक, श्राद्धा ७ जिल्लिण থেকে নপ্তন নপ্তন আইন স্থার্ঘট করেন এবং असाङ्नवार्व जार्रेतन यथायथ विलायन करान পরবর্তীতে এনব বিচারকঙ্গান প্রানীত আইন (Judge-Made) law) णागुाता विधावकात कर्ट्क व्यामकाल णतुङ्ग्ण २एण थाका झार्कित युक्जवास्त्रिव विषव-প্রতি সার্শান, 'रिर्देक्त প্রমূখ 'विठावक पण्टाव यथ नष्ट्रम प्यारीम स्थि कंत्रिएम

८ विष्वानअभाण जालाहता (&ientific Discussion): अथाण ज्यारीन विलायक्कणम झूलावान ७ आवशर्ष जालाहता, विलायन जवर निर्मिण अञ्चलस्य जार्रतन उड्डम रिआय वाक् वावन ८. नग्रायावि (figuity):-

णारेत निर्मिके ७ ऋणिकील विद्यात विक्रू अभाक्ष्य स्थित भाववर्णतकील ७ भणिक्रमा एत्य अविलय व्याप्टेत मयत मुलाभायाजी विद्यविष्ण रम ना वा भविवर्णिण ज्याप्ट्रात द्वाक्षिण ज्याप्ट्रात व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात विवर्णिण ज्याप्ट्रात व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात विवर्णित विवर्णित व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात व्याप्ट्रात विवर्णत विवर्णत विवर्णत व्याप्ट्रात व्याप

७. णारेन श्रात्या (Legistature):-

णाद्वितिक्याल पार्यतिक अवीत्रव्य छड्य राष्ट्र णार्यत शिव्या पार्यत यादा ख्राम्याच्या आसीत्रक अलीव दात्य पार्यत अत्यात कावत पार्वितिक वाक्रीम पार्यतिक पक विवाहि प्यत्म ख्राष्ट्र न्रासाह पार्यत शिव्यात पर्वक अतीव पार्यत, प्यार्थत शिव्यात स्वर्षेत्र पार्यत स्वर्णन काव्यत, प्यार्थत शिव्यात स्वर्षेत्र पार्यत स्वर्णन काव्यत, श्रामाल আহন সংশোধন করে তা সুগ্রাপযোধী করে তালে। প ক্ষেত্রত : (Public opinion):-

ওপোনহার্থনা, বন প্রদ্ধুখ অনীধী জ্বনগ্রতকে আইদে b. अनाञ्चात्रक ज्यायता (Administrative declaration) বর্জন্সানে আহন বিজ্ঞানের দায়িত্ব ও পরিবি অনেক বিষ্ণৃত হয়ে ভেছে। এই ভ্রিনতার কারনে च्यार्थेन विखान जात कर्छवा न्युमात काश न्यार्थीन কর্তে ভাষ্ণর হয়, ভাই আইন ভাতা তার নির্মে कुर्एखन वश्माःन नाजन विष्ठां मे कर्मवर्णिएन হাতে অর্পন করে এতাবে অর্ভিত ক্ষরতা বলে क्वितृक्ष द्यायता ७ प्याचेनअपृश्व श्रामात्रतिक-আইন বলে,

ন. সংবিধীন (Constitution):-

সংবিধীন আইনের গ্লুরুত্বপূর্ন উৎসা সংবিধীনে সরবারের বিভিন্ন -বিভাগের স্ক্রহাতা ও কাজের পরিবি স্ক্রমন্যাদি অন্তর্ভুক্ত থাকেন সংবিবীনের নির্দেশিত পথ বিরে আইনসতা আইন তিরি বারে

ज्यवितिणात ऋल विषय्यक्षः -

णवर्षि श्विवीतणात जिन्नेष्ठ काता अभाक्ष्य थावरू भारत ता. अभाक्ष्य अजिटि भातूम यिन जित्रिक्ष ७ जीआरीत अवितिण छेन्नर्णाश कात्य जित्र्य अर्थाण प्रकार रेक्षा ७ अर्थाष्ट्रत्व आत्य ज्यात्र अर्थाण पत्या पत्या अप्राक्ष अम्बाद्ध अर्थक्रीत कात्रात्र निकिण निवान्या विवात्त्व क्रमा युक्तित ज्यानावा ज्यान्यत्वत छेन्द्र निम्नक्षत ज्यात्वा व्यवगुक्त

८ प्राप्टित अविीतण ७ आह्यात भावस्माविक अभवर्षः-प्पार्थन ञ्वविनिण ७ ञाश्रित ञ्रवित भावस्माविक शुक्छ्रध्र् अञ्चर्क विद्याकृत्राता यिषेख प्यार्थन स्त्रायीनणात छित्रव विष्टुण नियमा वादा आर्रेलव अग्रिसर अकल्पव खार्यीतवा निष्किक कहा रम्। व्यार्थन ना থাকলে অবার্ধ স্থার্ধীনত। অর্জুন করতে গেলে একজ্ তার অবার্ধ স্থার্থীনতা ভোগের সার্ধ্যমে অন্যের স্থাবীনতাকে নম্ভ করে দিতো আইনের মার্ব্যক্ষে आभा अण्यी- अक्तात अभान व्यक्तित् অমান স্থ্যোগ্র স্থাবিধা নিশিত করা হয় व्यार्थतत् व्यवर्णभाता व्यव्हाता व्यव्हाता व्यव्हाता - विरायक यस शक्। व्याप्टिन ना थाकल ञ्चञाक कीवत एमावर एकाक्कण ७ विश्वकालाणः नाक्ष्य अक रया पण ज्यवीमण ७ जाह्यात ব্যাঘাত ঘটে

व्याधितण भावसाविकणाव अभवंयुकः